

साफ पानी

साफ पानी प्रोजेक्ट यूरोपीय संघ द्वारा निधि पोषित एक सहयोगपूर्ण केन्द्र अनुसंधान परियोजना है जो अक्टूबर 2011 में तीन वर्ष की अवधि के लिए शुरू की गई थी और जिसमें भारत, यूरोपीय संघ, स्विटजरलैंड, श्रीलंका तथा आस्ट्रेलिया के 20 सहयोगियों का संकाय शामिल है। इसका पूरा नाम "भारत में सुरक्षित एवं दीर्घकालिक जलापूर्ति के लिए

प्राकृतिक जल तंत्रों तथा उपचार पद्धतियों को बढ़ावा" है तथा यह 21वीं सदी की जल चुनौतियों पर चर्चा करता है। साफ पानी प्रोजेक्ट हाई-टैक मापन उपकरण तथा क्षेत्रीय परिक्षणों के अनुप्रयोग द्वारा उनके सुधार के लिए संभाव्यता का अधिनिर्धारण कर जल के प्राकृतिक उपचार तथा भण्डारण के लिए पहले से ही मौजूद भारतीय परियोजनाओं पर आधारित है। अधिक जानकारी के लिए कृपया www.saphpani.eu पर जाएं।

WP5 प्रमुख विशेषताएं

साफ पानी प्रोजेक्ट का वर्क पैकेज 5 'मॉडलिंग एण्ड सिस्टम डिजाइन' कहलाता है। इस वर्क प्रोजेक्ट में द्रवगतिकीय एवं द्रव रसायनिक प्रतिरूपण प्राकृतिक जल उपचार तंत्रों के विकास के विभिन्न चरणों में मार्गदर्शन करेगा। हमारे अध्ययन स्थलों में से सात स्थलों में जल प्रवाह एवं गुणवत्ता निदर्श साफ पानी में विभिन्न NTS अध्ययनों के लिए विकसित किए गये हैं।

वोलफ्राम क्लोपमान के साथ साक्षात्कार

वोलफ्राम क्लोपमान वर्क पैकेज 5 के प्रमुख हैं, और 18 वर्षों से आरे लिन्स फ्रांस में फ्रेंच जिओलॉजिकल सर्वे बी. आर.जी.एम. में कार्य कर रहे हैं। इन्होंने पेरिस XI यूनिवर्सिटी से आइसोटोप हाइड्रोजिओ केमेस्ट्री में पी.एच.डी. हासिल की है, ये प्राकृतिक द्रव्यों के रासायनिक एवं समस्थानिक अभिलक्षणों, जल-चट्टान अन्योन्यक्रिया और भूजल गुणवत्ता से संबंधित पर्यावरणीय मामलों तथा गैर-परम्परागत जल संसाधनों के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, ये बी.आर.जी.एम. समस्थानिक प्रयोगशाला के प्रभारी हैं।।



प्राकृतिक उपचार तंत्रों के विकास में प्रतिरूपण किस प्रकार से सहायक हो सकता है ?

प्राकृतिक उपचार तंत्रों की विशिष्टता यह है कि वे सतही एवं भूजल तथा संदूषकों के जटिल पारस्परिक अंतःक्रिया पर निर्भर प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर आश्रित रहते हैं और उनमें सूक्ष्मजीव एवं पौधों सहित जलदायी स्तर मैट्रिक्स भी अंतर्विष्ट रहते हैं। पूर्णतया अभियांत्रिकी प्रणाली के होते हुए भी, पहले एन.टी.एस. की कार्य प्रणाली को समझने की आवश्यकता है ताकि उसके निष्पादनता की भविष्यवाणी की जा सके। और जब इसकी प्रागुक्ति होती है, तब इसमें प्रतिरूपण आता है। एक बार जब विभिन्न मापनों के आधार पर संकल्पनात्मक निर्देश को उनके व्यवहार के अनुरूप स्थापित कर लिया जाए तो विश्लेषणात्मक एवं गणनात्मक निर्देश स्थापित किया जा सकता है। ऐसे निर्देश विविध परिदृश्यों का परीक्षण कर सकते हैं ताकि जल विभाजकों के अन्तर्गत एन.टी.एस. के कार्यान्वयन का इष्टतम उपयोग किया जा सके।

स्थानीय पैमाने पर अच्छे तकनीकी विकल्पों द्वारा किसी भी एन.टी.एस. के विकास के लिए भी निर्देश उपयोगी हो

सकते हैं। कुल मिलाकर ये वे प्रबंधन प्रक्रियाएं हैं जो एन.टी.एस. के मंहगे रियल साईज ट्रायल एण्ड एरर टेस्टिंग को बचा सकते हैं तथा जिससे जल गुणवत्ता एवं मात्रा पर एन.टी.एस. के सम्भावित प्रभावों से जुड़े आकस्मिक परिणामों से बचा जा सकता है।

साफ पानी में सबसे बड़ी चुनौती क्या थी ?

एकीकरण! जब निर्मित आर्द्रभूमि या अंतःस्रवण टैंक (मृदा-जलभृत उपचार) जैसे एन.टी.एस. को देखते हैं, हमें सतही वाह जल, असंतृप्त मृदा क्षेत्र, जटिल लेकिन जलशोधन के लिए प्रमाणिक, संतृप्त भूजल प्रवाह और यहाँ तक कि तटीय जलभृत में घनत्व परिचालित लवण जल प्रवाह को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। जल प्रवाह एक सांतत्यक प्रक्रिया है लेकिन वर्तमान में उपलब्ध निदर्श अभी तक इसका उपचार करने में सक्षम नहीं है।

सतह पर असंतृप्त से संतृप्त और घनत्व परिचालित प्रवाह को जलविभाजक पैमानों पर सम्पूर्ण जल चक्र को ध्यान में रखते हुए साफ पानी में एकीकृत निदर्शों को स्थापित करने के लिए बहुत कार्य किए गये। हमने पैमाने को भी एकीकृत किया, स्थानीय पैमाने पर उनके कार्यों की एन.टी.एस. के निदर्शन के लिए निरन्तर जाँच किए जाने की आवश्यकता है लेकिन यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि उस स्थिति में क्या होगा यदि उनमें से एक बड़ी मात्रा को जलविभाजकों में कार्यान्वित किया जाता है? अंतः स्रवण टैंक इसका एक विशिष्ट उदाहरण हैं महेश्वरम स्थल पर हमारा प्रेक्षण यह दर्शाता है कि वर्षा के साथ उनका विस्तार सभी तीनों विमाओं में काफी भिन्न रहता है वे मौसम के साथ-साथ “विकसित” होते हैं; शुष्क मौसम में एक छोटे पोखर के रूप में सिकुड़ जाते हैं और वर्षा शुरु होते ही झील का रूप ले लेते हैं।

यदि हम इनकी भूमिति को समय के साथ-साथ स्थिर मानते हैं तो यह अत्याधिक सरलीकरण प्रक्रिया होगी जो त्रुटिपूर्ण परिणाम दे सकती है, यदि हम भूजल पुनर्भरण पर इनके वास्तविक प्रभाव का आकलन करते हैं। इस कारण MARTHE साफ्टवेयर के लिए एक विशिष्ट मॉड्यूल विकसित किया गया है जो कि मेरे द्वारा तैयार की गई सभी प्रवाह प्रकार की सूची के सन्दर्भ में पहले से ही पूर्णतया एकीकृत है, जो वर्षा से अंतःस्रवण टैंकों के “BREATHING” वाष्पन डाटा तथा सतही स्थलाकृति का अनुकरण करने में सक्षम है।

अन्य प्रकार का एकीकरण जो महत्वपूर्ण प्रतीत होता है वह जल प्रवाह का जल गुणवत्ता परिवर्तनों के साथ था। यहाँ साफ पानी परियोजना का बेहतरीन उदाहरण यह है कि अत्याधिक प्रदूषित यमुना नदी, जलोढ़ जलभृत के आर-पार उन कूपों में पहुँचने से पहले, जो नदी तट निस्यन्द को पम्प करते हैं, अमोनियम परिवहन का अनुकरण करते हैं।

सबसे पहले अमोनियम का मापन तथा निदर्शन प्रयोगशाला स्तर पर अंतःस्रवण प्रयोगों द्वारा अवसाद स्तम्भों में किया गया, इसके पश्चात रिएक्टिव ट्रांसपोर्ट मॉडलिंग द्वारा इसे जलभृत स्तर तक बढ़ा दिया गया। जलभृत पदार्थ पर चूषण के कारण जलभृत कई दशकों से अमोनियम की पर्याप्त ठहराव अवधि ही एक महत्वपूर्ण परिणाम है।

साफ पानी में सभी तीनों प्रकार प्राकृतिक उपचार तंत्रों (एन.टी.एस.), मृदा-जलभृत उपचार सहित प्रबंधित जलभृत पुनर्भरण, निर्मित आर्द्र भूमि तथा नदी तट निःसंयन्दन के लिए निदर्श विकसित किए गए। इन विधियों को समझने, नियोजन एवं एन.टी.एस. के इष्ट तमीकरण में उपयोग कैसे किया जा सकता है। इस बात को प्रदर्शित किया गया। जिन निदर्शन उपकरणों का प्रयोग किया गया है वे विस्तृत एवं सुगम्य है, (अर्थात् MODFLOW, MARTHE, MIKE-SHE)। यहाँ तक कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में एन.टी.एस. कार्यान्वयन की विशिष्ट समस्याओं पर इन उपकरणों के अनुप्रयोग में भिन्न-भिन्न बेसिन स्तरों तक एन.टी.एस. जैसे जटिल तंत्रों के एकीकृत निदर्शन हेतु प्रशिक्षित विशेषज्ञों की आवश्यकता है।

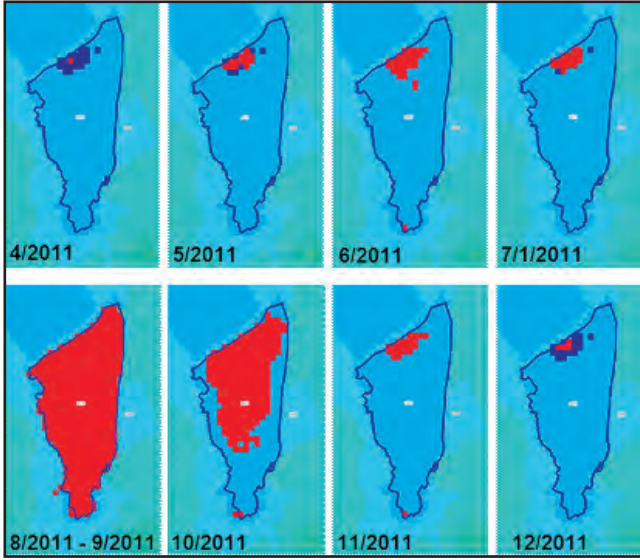
मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस परियोजना की जानकारी तथा ज्ञान को युवा वैज्ञानिकों तथा अभियन्ताओं तक उन भारतीय संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से पहुँचाया जाएगा जो साफ, पानी परियोजना में इन विधियों के विकास से जुड़े थे।

विषय विशेष अध्ययन – वेदर्ड क्रिस्टेलाइन बेडराक पर अंतः स्रवण टैंक का स्थानीय निदर्शन –

सिंचाई के लिए अत्याधिक दोहन के कारण हुए भूजल के अतिदोहन की समस्या के निपटने के लिए प्रबंधित जलभृत पुनर्भरण (MAR) भूजल संसाधनों को बढ़ाने के लिए एक बेहतरीन प्रक्रिया है अर्ध शुष्क जलवायु के अन्तर्गत भारतीय क्रिस्टेलाइन बेसमेंट के सन्दर्भ में अंतःस्रवण टैंक, चैक डेम, खनन कूप जैसे पुनर्भरण संरचनाओं की संख्या में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है।

एम.ए.आर. की कार्य क्षमता के निर्धारण के लिए थ्री-डाईमेंशनल ट्रांसिएन्ट न्यूमेरिकल ग्राउण्ड वाटर कोड (MARTHE) को एक असंतृप्त क्षेत्र से भूजल के साथ त्रिविमीय गैर-बारहमासी सतही जल निकाओं के क्रियान्वयन से उपयुक्त बनाया गया। क्रियान्वयन में प्राकृतिक अंतःस्रवण टैंकों का स्थानिककालिक विकास (अर्थात् आयतन एवं जयामिती) शामिल है जो स्थलाकृति से जुड़ी है तथा जिसमें मॉनसून के दौरान भारी वर्षा, वाष्पोत्सर्जन, अपवाह, अंतःसंयन्दन तथा भूजल गतिकी को भी ध्यान में रखा गया है। मॉनसून काल के दौरान इन टैंकों में भण्डारित वर्षा जल का कुछ भाग मृदा में निसंयदित होता है तथा जलभृत में पहुँचाता

है जबकि कुछ भाग वाष्पित हो जाता है। सैज्ञानिक अनुकरण दर्शाते हैं कि नया माड्यूल सतही जल तथा भूजल के बीच संबंध को अनुरूपित करने में सक्षम है। जलविभाजक स्तर पर भूजल संसाधनों पर MAR के मात्रात्मक प्रभावों के निर्धारण के



लिए त्रिविमीय MARTHE निदर्श अब निर्णय समर्थित उपकरण के रूप में प्रयोग लाए जाने हेतु तैयार है।

वर्षा 2011 के वर्षाकाल में टुमुलुर टैंक सर्फेस का अनुकारित परिवर्ती विस्तार, हैदराबाद के निकट महेश्वरम अध्ययन स्थल, तेलंगाना, भारत साफ पानी परियोजना की अंतिम बैठक पूर्णतया सफल रही।

साफ पानी की आखरी कान्फेन्स बहुत सफल रही

साफ पानी परियोजना की अंतिम बैठक दिनांक 17-18 सितम्बर 2014 को इंडियन हैबिटेट सेन्टर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुई।

सुश्री उमा भारती, केन्द्रीय जल संसाधन, नदी विकास तथा गंगा संरक्षण मंत्री ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन में श्री अमर जीत सिंह, अपर सचिव, जल संसाधन, थोमस विन्टजन, परियोजना एमन्यवक, श्री आर. डी. सिंह, निदेशक, राजसं, श्री राजेन्द्र प्रसाद, आंध्र विश्वविद्यालय भी उपस्थिति थे।

इस दो दिवसीय सम्मेलन में साफ पानी परियोजना के परिणामों पर सूचनात्मक प्रस्तुतियाँ दी गईं। इसमें उच्च स्तरीय नीति निर्धारको एवं निर्णयाकों को महत्वपूर्ण अनुशंसाएं प्रस्तुत की गईं।

सबके अलावा प्राकृतिक उपचार तंत्रों पर केन्द्रित तीन अन्य परियोजनाओं अर्थात् SWNGS SARASWATI एवं NAWATECH प्रस्तुत किए गए।



अंतिम बैठक का उद्घाटन



पोस्टर प्रदर्शनी

उक्त कार्यक्रम के अलावा एक पोस्टर सत्र भी संचालित किया गया जिसमें छात्रों ने साफ पानी परियोजनाओं को कार्यो एवं उसके परिणामों पर अपनी प्रस्तुति दी। इस सम्मेलन में साफ पानी संकाय के अतिरिक्त लगभग 100 प्रतिभागी उपस्थिति थे।

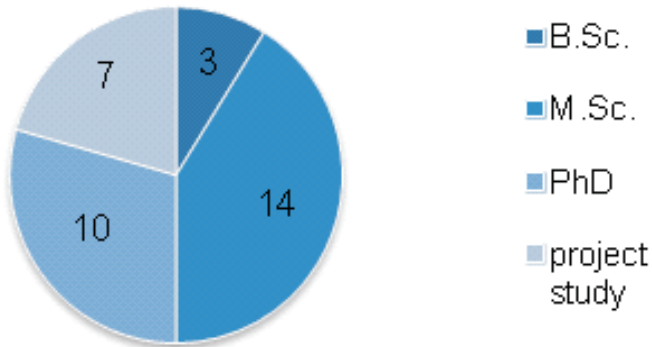
साफ पानी परियोजना से जुड़े छात्र

साफ पानी परियोजना से कई युवा शोध छात्र जुड़े हुए हैं तथा उन्होंने भिन्न-भिन्न शोध क्षेत्रों में अनुभव प्राप्त किया। इस आलेख में हम छात्रों की संख्या पर संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना चाहते हैं।

साफ पानी विषय पर 39 छात्रों ने थीसिस अथवा थीसिस के एक भाग को लिखा। नीचे दिया गया ग्राफ दर्शाता है कि अधिकांश थीसिस मास्टर थीसिस थी।

परियोजना अध्ययन दो-दो छात्रों के समूहों में किया गया। 13 मामलों में छात्रों को उनके अनुसंधान कार्यो के लिए संकाय के भारतीय सहभागी संगठनों में भेजा गया। 18 थीसिस अथवा

प्रोजेक्ट यूरोपियन सहभागियों द्वारा तथा 16 थीसिस भारतीय सहभागियों द्वारा पूर्ण की गई। हम आभार प्रकट करते हैं कि एफ.पी. – 7, डी.एस.टी. तथा अन्य वित्तपोषक निकायों के सहयोग से हम कई अध्ययनों को पूरा कर पाए हैं।



थीसिस के प्रकार

सुरक्षित कृषि उत्पादन के लिए आर्द्रभूमि प्राकृतिक उपचार तंत्रों के रूप में; उपचारित अपशिष्ट जल के पुनः उपयोग पर पणधारी सर्वेक्षण।

कृषि उत्पादन के लिए उपचारित अपशिष्ट जल के प्रयोग पर किसानों, उपभोक्ताओं तथा सरकारी पदाधिकारियों के अनुभवों को जानकारी प्राप्त करने के लिए पणधारी सर्वेक्षण किया गया। सुझाई गई विशिष्ट उपचार प्रक्रिया जिसे किसान समुदाय स्तर पर पर अथवा व्यक्तिगत स्तर पर प्रयोग में ला सकते हैं वह न्यून लागत प्राकृतिक/अभियांत्रिक आर्द्र भूमि तंत्र थी। आई.डब्ल्यू.एम.आई. के भी महेश जम्पानी तथा सी.एस.आई.आर.-एन.जी.आर.आई. के भी एस सोनकाम्बले ने जुलाई 2014 में किसान एवं उपभोक्ता सर्वेक्षण संचालित किया तथा यह पाया कि किसान तथा उपभोक्ता दोनों ही स्वच्छ जल तथा उत्पाद के लिए अतिरिक्त धन के भुगतान के लिए तैयार हैं जो कि उपभोग के लिए सुरक्षित है। पणधारियों के लिए दिनांक 12 सितम्बर 2014 को "अपशिष्ट जल के पुनः प्रयोग के लिए आर्द्रभूमि एक प्राकृतिक उपचार एवं तंत्र के रूप में" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। यह कार्यशाला अन्तर्राष्ट्रीय जल प्रबन्धन संस्थान (आई.डब्ल्यू.एम.आई.), राष्ट्रीय भू-भौतिक अनुसंधान संस्थान (CSIR-NGRI), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे (IITB) तथा एन्वार्यनमेन्टल मैनेजमेंट एण्ड डिसेजन स्पॉर्ट केन्द्र, आस्ट्रिया (CEMDS) द्वारा (SIR-NGRI) कैम्पस में साफ पानी परियोजना के वर्क पैकेज के एक भाग के रूप में संयुक्त रूप से आयोजित की गई। इस कार्यशाला का उद्देश्य मूसी कैम्पमेंट में कृषि के लिए अपशिष्ट जल उपचार हेतु प्राकृतिक आर्द्रभूमि तंत्रों के प्रयोग पर विभिन्न सरकारी पणधारियों के विचारों को प्राप्त करना था।

इस कार्यशाला में लगभग 40 प्रतिभागियों ने भाग

लिया जिसमें तेलंगाना राज्य तथा केन्द्र सरकार के विभिन्न संगठनों तथा तेलंगाना राज्य भूजल विभाग, केन्द्रीय भूजल बोर्ड (CGWB), राष्ट्रीय सुदूर संवेदन (NRSC-ISRO) केन्द्र केन्द्रीय शुष्क भूमि कृषि अनुसंधान संस्थान (CRIDA), हैदराबाद महानगर विकास प्राधिकरण (HMDA), तेलंगाना राज्य कृषि कमीशनरी, जल एवं भूमि प्रबन्धन प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (WALAMTARI) सिंचाई एवं कमाण्ड क्षेत्र विकास (CAD) विभाग विभाग (I & CAD) तेलंगाना सरकार, ग्रामीण विकास विभाग, तेलंगाना तथा भू-रसायन विभाग, ओस्मानिया विश्वविद्यालय के 14 प्रतिनिधि शामिल थे।

डा. वाई.जे. भास्कर राव, निदेशक, (CSIR-NGRI) ने अतिथियों का स्वागत किया तथा सत्र की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि श्रीमती गायत्री रामचन्द्रन, IAS, पूर्व प्रधान सचिव ने उद्घाटन अभिभाषण प्रस्तुत किया तथा इस बात पर जोर देते हुए कहा कि आज देश के कई भागों में सिंचाई जल प्रदूषित हो चुका है जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर दुःष्प्रभाव पड़ रहा है। IWMI के डा. प्रियानी अमर सिंधे ने कृषि के लिए अपशिष्ट जल उपचार हेतु प्राकृतिक आर्द्रभूमि तंत्रों के प्रयोग की संकल्पना प्रस्तुत की तथा साफ पानी परियोजना के अनुभवों को साझा किया और तत्पश्चात श्रोताओं के विचारों को भी जाना। डा. एस. सोनकाम्बले (CSIR-NGRI) तथा दिनेश कुमार (IITB) ने भी प्राकृतिक उपचार तंत्रों के क्षेत्रीय तथा प्रयोगशाला से जुड़े अनुभवों को साझा किया। प्रतिभागियों की राय थी कि अनुकूलन तथा सततता के निर्धारण के लिए पायलट सिस्टम अपनाया जाना चाहिए जिसमें सभी कार्यकर्ता—किसान, उपभोक्ता, सेवा प्रदाता (सरकारी संस्थाएं तथा गैर-सरकारी संगठन) शामिल हों।

इस दौरान आर्द्रभूमि निर्माण तथा क्षमता संवर्धन के लिए जागरूकता पैदा करने, सुरक्षित फसलों के उत्पादन की जिम्मेवारी तथा रियायतों के बारे में व्यापक चर्चा की गई। प्रस्तुत किए गए तीन परिदृश्यों में एकल खेती के लिए मिनी-वैटलैण्ड्स को अत्याधिक व्यवहारिक एक संभाव्य माना गया। डा. शकील अहमद तथा मारकुश स्टारकेल ने कहा कि कार्यशाला ने अपशिष्ट जल उपचार के विकल्पों पर चर्चा तथा



(CSIR-NGRI) हैदराबाद में पणधारी कार्यशाला में चर्चा करते प्रतिभागीगण।

सतत एवं सुरक्षित खाद्यान उत्पादन के महत्व को जानने के लिए भिन्न-भिन्न सरकारी संगठनों के लिए एक उपयुक्त मंच प्रदान किया है।

साफ पानी हैण्ड बुक

साफ पानी संकाय द्वारा एक हैण्ड बुक तैयार की जा रही है जिसमें परियोजना की विषय-वस्तुओं तथा परिणामों को संकलित किया गया है। यह पुस्तक IWA द्वारा फरवरी/मार्च 2015 में "भारतीय सन्दर्भ में सुरक्षित एवं सतत जल आपूर्ति के लिए प्राकृतिक जल उपचार तंत्र; साफ पानी" विषय पर प्रकाशित की जाएगी।

इस पुस्तक में BF MAR और CW का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इसमें हमारे कुछ विषय-विशेष स्थलों की भी विस्तृत व्याख्या की जाएगी। प्रबन्धन तथा गणवत्ता संबंधी प्रकरणों तथा प्राकृतिक जल उपचार तंत्रों के लिए प्रि तथा पोस्ट-ट्रीटमेंट का भी समाधान किया जाएगा। यह प्रदर्शित किया जाएगा कि प्राकृतिक जल उपचार तंत्रों के लिए निदर्शन किस प्रकार नियोजन एवं इष्टतमीकरण प्रक्रिया के रूप में कार्य कर सकता है। जैसे ही उक्त पुस्तक उपलब्ध होगी हम आपको अपनी साफ पानी वेबसाइट पर सूचना देगे।

प्रचार –प्रसार

अनुप्रयुक्त विभाग एवं कला विश्वविद्यालय में एशिया पेसिफिक इन्फो डे, बरने।

एन्डर्स नैटोर्प द्वारा दिनांक 20 अक्टूबर 2014 को इन्फो डे पर साफ पानी पर प्रस्तुति दी गई।

MAR-SAT वर्कशाल एवं एक्सपर्ट फोरम

तेल अवीव, इसराइल में दिनांक 3-4 दिसम्बर को कार्यशाला आयोजित की जाएगी।

क्रिस्टोफ स्त्रैनगर द्वारा साफ पानी पर प्रस्तुति की जाएगी।

द पावर्ड प्लानेट; वाटर ऑन टेप

नेचर जर्नल 510, इश्यू 7505, में साफ पानी को प्रकाशित किया गया।

अंतिम साफ पानी न्यूजलेटर

यह साफ पानी का अंतिम न्यूज लेटर है तथा और हम पिछले तीन वर्षों के दौरान आपके द्वारा दर्शाई गई रुचि के लिए आभार प्रकट करते हैं। हमने आपको व्यक्तियों, गतिविधियों तथा परिणामों के, बारे में जानकारी दी।

परियोजना का कार्यकाल अधिकारिक रूप से समाप्त हो चुका है। हमें अपने कार्य के लिए सम्मान एवं मान्यता मिली है और हम विश्वस्त हैं कि प्राकृतिक जल उपचार विधियाँ भविष्य में भारत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। साफ पानी परियोजना के सहभागी प्रोजेक्ट रिपोर्टों को पूरा कर अपना बेहतर योगदान देगे तथा इन्हे जल के क्षेत्र से जुड़े पणधारियों तथा आपको वेबसाइट पर उपलब्ध कराएगे। जो आगामी 5 वर्षों तक सूचना प्रदान करते रहेगे। आने वाली साफ पानी हैण्ड बुक में अत्याधिक महत्वपूर्ण निष्कर्षों को प्रस्तुत किया जाएगा। हम मंत्रालयों तथा प्रशासकों को अपनी अनुशंसाएं प्रस्तुत कर रहे हैं तथा हम उच्च स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों (उदाहरण हेतु D 7.3 देखे) तथा शिक्षा में परियोजना निष्कर्षों को शामिल करने का प्रयास करेंगे। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान इसे और आगे ले जाने पर सहमत है। इतना ही नहीं, साफ पानी परियोजना के सहभागी इस क्षेत्र में सक्रियता पूर्वक कार्य करते रहेगे।

हमें यह सेवा करते हुए प्रसन्नता होगी तथा हम भविष्य में सहभागिता हेतु तैयार रहेगे। अतः आप हमसे निःसंकोच सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पादक

जुलिया पलेटनर एवं एन्डर्स नैटोर्प



Project supported by the European Commission within the Seventh Framework Programme Grant agreement No. 282911

This publication reflects only the author's views and the European Union is not liable for any use that may be made of the information contained



Contact: info@saphpani.eu
Website: www.saphpani.eu